11582

जीवन वीणा

शासकीय जिला पुस्तकालय टीकमगढ़
को सादर भेंट
अनीता
31-3-2021

कविता संग्रह

अनीता श्रीवास्तव

अंजुमन प्रकाशन

Scanned with OKEN Scanner

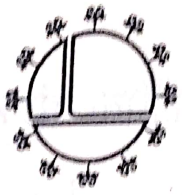

जीवन वीणा (कविता संग्रह)
सर्वाधिकार : अनीता श्रीवास्तव 2019

मूल्य भारत में ₹ 150
मूल्य विदेश में $ 8

अंजुमन प्रकाशन
942, आर्य कन्या चौराहा, मुट्ठीगंज
प्रयागराज - 211003 उत्तर प्रदेश, भारत
website - www.anjumanpublication.com
E-mail - anjumanprakashan@gmail.com

प्रथम संस्करण अंजुमन प्रकाशन द्वारा 2019 में प्रकाशित
आवरण व टाइपसेटिंग - अंजुमन प्रकाशन, प्रयागराज
भारत में मुद्रित
ISBN : 978-93-88556-12-5

Scanned with OKEN Scanner

11582

प्यारे पापा को याद करते हुए

Scanned with OKEN Scanner

1582

भूमिका

कविता मनुष्य की तीसरी आँख है – कल्याण की विधात्री (शिवेतरक्षतये- मम्मट) और पारदर्शी (ऋतंभरा प्रज्ञा -योगदर्शन)। आचार्य मम्मट ने काव्य के प्रयोजनों पर चर्चा करते हुये इसे लोक कल्याण का विधायक इसीलिए कहा है क्योंकि शिव का तीसरा नेत्र अनिष्ट का शमन करने की सर्वाधिक सामर्थ्य तो रखता ही है, इसकी महत्ता इसकी वह परादृष्टि भी है जिसे योगदर्शन में महर्षि पतंजलि 'ऋतंभरा प्रज्ञा' से उपहित करते हैं। इस प्रकार संसार और समाज में विचरण करने वाले मनुष्यों में अतिविशेष की यह पहचान उस व्यक्ति के आत्मसाक्षात्कार के वृत्त से किसी प्रकार कम नहीं है।

अनीता श्रीवास्तव की 'जीवन वीणा' काव्यकृति कुछ ऐसी ही साधना और सिद्धि का परिणाम होगी, ऐसा मेरा अनुमान कहता है। जीवन को वीणा मानकर चलने वाले साधना के पथिक की सबसे बड़ी चुनौती इस 'असाध्य' को साधने जैसी ही है। इसके सदा कंपित रहने वाले तारों को तो उसे साधना है ही, इसके मौन झंकार की भी उसे अनदेखी नहीं करनी है। यह कोई स्वप्न का जागरण न होकर जागरण का भी स्वप्न ही है- सुषुप्ति और तुरीय अवस्थाओं के परे, जैसा कि यजुर्वेद के द्रष्टा कवि का उद्घोष है –

'जागरण में दूर जाता जो बहुत
और उतना ही चला करता जब हम सुप्त होते
ज्योंतियों की ज्योति जो है एक
मेरा मन !
सदा शिव संकल्पकारी हो। '
(तन्मे मनः शिव संकलमस्तु)

अपने 'प्यारे पापा' की स्मृति को समर्पित इस संग्रह की कविताओं का केंद्रीय स्वर कवयित्री की गहन आंतरिक संवेदनाओं को सिलसिलेवार आकार देता जैसे उस रिक्ति की पूर्ति में ही सचेष्ट है जिसकी चुनौती उसने स्वीकार कर उसे पाट देने की प्रतिज्ञा ले रखी है। इसलिए जब वह अपने पापा को अपने में 'जिंदा' देखती है तो उसका तर्क अकाट्य हो जाता है –

'मेरे चेहरे में चेहरा उनका
मेरी बोली में लहजा उनका

Scanned with OKEN Scanner

अनीता श्रीवास्तव

पिता - स्व. श्री रमेश चन्द्र श्रीवास्तव

पति - श्री वीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

जन्मस्थान - ललितपुर, उत्तरप्रदेश

शिक्षा - एम.एससी. (वनस्पति शास्त्र) : बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी
बी.जे. : माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विवि, भोपाल
बी.एड. : बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

कार्य निष्पादन - 1993 से 1996 तक तक दूरदर्शन केन्द्र, भोपाल में उद्घोषक
2000 से 2007 तक आकाशवाणी, रीवा में आकस्मिक उद्घोषक
रेडियो पर कविताएँ, नाटक एवं वार्ता प्रसारित
कहानी 'धरती की छाती में', 'यूँ ठगी गई राधिका' और 'अन्धविश्वास'
प्रकाशित। नशामुक्ति पर आधारित कहानी 'पुरस्कार' रेडियो पर प्रसारित।

सम्प्रति - शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बैढन, जिला सिंगरौली,
मध्य प्रदेश में जीवविज्ञान शिक्षक के पद पर सेवारत

ईमेल - shrivastavanita63@gmail.com

अंजुमन प्रकाशन
942 आर्य कन्या चौराहा
मुट्ठीगंज, प्रयागराज - 211003
उत्तर प्रदेश, भारत
anjumanpublication.com

₹ 150 $ 8

कहानी

ISBN - 978-93-88556-12-5

Scanned with OKEN Scanner